निगम सामाजिकउत्तरदायित्व (सीएसआर) नालको में एक प्रक्रिया है जहाँ नालको अपने व्यापार में सामाजिक तथा पर्यावरणीय चिन्ताओं को समेकित करने का प्रयास करता है। ये गतिविधियाँ अधिकतर कम्पनी के कानूनों तथा कुछ मामलों में कम्पनी द्वारा की गयी एक पहल से अनुबन्धित हैं।

आकलन की योजना तथा आवश्यकता: सीएसआर गतिविधियों के विस्तार में जाने से पूर्व बजट सहित उचित योजना तैयार की जाती है। दल के सदस्यों की भूमिका तथा उत्तरदायित्व निर्धारित किये जाते हैं और इस पहल का प्रथम कार्य सीएसआर परियोजना हेतु आवश्यक आकलन करना है। समुदाय की सटीक आवश्यकताओं का आकलन किए बिना परियोजना स्थायी नहीं हो पायेगी और इसका प्रभाव भी न्यूनतम होगा। सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव, पर्यावरणीय मुद्दे, अवसंरचना की स्थिति, स्वास्थ्य सुविधाएँ, शैक्षिक जागरुकता तथा उसका स्तर, भोजन तथा जल की उपलब्धता, सार्वजनिक परिवहन एवं स्वच्छता वांछनीयताएँ का आकलन भी सीएसआर परियोजना प्रारम्भ करने से पूर्व किया जाना चाहिए। इसे समुदाय के लिए प्रभावी बनाने तथा कारपोरेट सौहार्द्र प्रदर्शित करने के लिए गहन आकलन की आवश्यकता होती है। इस पहल का सन्दर्भ समाज के व्यापक हित के लिए महत्त्वपूर्ण है।

आवर्ती आकलन: परियोजना के क्रियान्वयन के पश्चात समुदाय की सामाजिक स्थिति उन्नत होने वाली है या नहीं, यह सुनिश्चित करने के लिए परियोजना के पूर्व और पश्चात के परिदृश्य को रेखांकित करना महत्त्वपूर्ण है। अनेक मामलों में यह एक बार की गतिविधि नहीं रहती है और प्रत्याशित परिणाम के आकलन सहित इसकी प्रगति की निगरानी करना आवश्यक होता है। इसका अर्थ है कि आकलन की क्रिया आवर्ती अन्तराल पर एक सतत प्रक्रिया होने वाली है। समुदाय की आवश्यकताओं में परिवर्तन भी एक महत्त्वपूर्ण कारक है।

आवश्यकता आकलन किस प्रकार संचालित होता है?

ऐसे अनेक उपाय हैं जिसमें नालको आवश्यकता आकलन संचालित करता है।

अनुसन्धान: किसी नई परियोजना को प्रारम्भ करने के लिए आधुनिक विश्व में इंटरनेट आधारित अनुसन्धान प्रथम वस्तु है और यह सीएसआर परियोजना के लिए भी प्रयोज्य है। इंटरनेट पर सूचना ढूँढने की सरलता के कारण किसी विशेष कस्बे, क्षेत्र अथवा समुदाय की आवश्यकता के विषय में विभिन्न रिपोर्ट तथा समाचार के माध्यम से समस्त उपलब्ध सूचना के विषय में जानकारी प्राप्त कर ली जाती है। सरकार अथवा एनजीओ द्वारा सृजित एवं प्रकाशित रिपोर्ट अधिक विश्वसनीय होती है।

लोगों से बातचीत: सर्वेक्षण किसी सामाजिक आवश्यकता आकलनों का महत्त्वपूर्ण अंग है और जमीनी स्तर पर लोगों से बातचीत करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। हमारे स्वयंसेवक विभिन्न

क्षेत्रों में जाते हैं और कुछ मूल्यवान फीडबैक उपलब्ध कराने के लिए प्रश्नोत्तरी सत्र को नोट करते हैं अथवा उनका रिकार्ड तैयार करते हैं।

समूहों से बातचीत: स्वास्थ्य सुविधाओं अथवा पेयजल की कमी जैसे सामान्य मुद्दों को ढूँढने के लिए सामूहिक परिचर्चा पर ध्यान केन्द्रित करना एक प्रभावी उपाय है।

उपलब्ध परिसम्पत्तियों का उपयोग: प्राकृतिक संसाधन, मानव श्रम, पर्यावरणीय दशाओं जैसी परिसम्पत्तियाँ, किसी विशेष मुद्दे के समाधान के लिए अन्य संगठनों अथवा सरकार द्वारा पहले से किये गये कार्य आदि- यह सूचना आकलन आवश्यकताओं को इस प्रकार सशक्त करती है जिसका परियोजना तथा समुदाय के हित में परिसम्पत्तियों का उपयोग एवं आरेखण किया जा सकता है।

साझेदारों की संलिप्तता: किसी सामुदायिक परियोजना में अनेक साझेदार संलिप्त होते हैं। वित्तपोषक कम्पनी, स्थानीय सरकार, स्थानीय राजनेता एवं सबसे महत्त्वपूर्ण वे समुदाय हैं जिसके लिए परियोजना का क्रियान्वयन किया जाना है। इन सभी को साथ मिलाकर उन्हें परियोजना की सफलता के लिए संयोजित करना एक महत्त्वपूर्ण कार्य है।